Content

अनुक्रमणिका :

✓ विषय प्रवेश — पृष्ठ १५ से ३४ ।

१. सामग्री संकलन के सूत्र :

:अ: सन्तवाणी संग्रह । :ब: आलोचनात्मक सामग्री ।

२. एतद् विषयक शोध-कार्य का विहंगावलोकन :

:अ: गवेषणात्मक शोध-कार्य ।

:ब: तुलनात्मक शोध-कार्य ।

३. प्रेरणा एवं महत्त्व :

४. विषय का स्पष्टीकरण एवं उसकी सीमाएँ :

:अ: पंथ, प्रणालिका और सम्प्रदाय ।

:ब: 'सन्त' शब्द की व्याख्या ।

:क: 'गुजराती सन्त कवि' की व्याख्या ।

:ड: गुजरात, गुजराती एवं हिन्दी से—
हमारा तात्पर्य ।

:इ: हिन्दी तथा गुजराती की निकटता—
एवं पारस्परिक सम्बन्ध ।

:ई: काल—निर्णय ।

प्रथम परिच्छेद : पृष्ठ १ से २१ ।

"गुजरात की ज्ञानमार्गी धारा की पृष्ठभूमि"

भारतीय संत-परम्परा की एक अभिन्न कड़ी

ऐतिहासिक पृष्ठभूमि :

१. हिन्दू-शासन ।
२. मुसलमान-युग ।
३. शान्ति-काल ।
४. संक्रान्ति-काल ।

सामाजिक एवं धार्मिक पृष्ठभूमि :

१. कठोर सामाजिक एवं धार्मिक बन्धन :

आन्तरिक प्रभाव

जैनमत का प्रभाव ।
वैष्णव धर्म का प्रभाव ।
स्वामीनारायण सम्प्रदाय का प्रभाव ।

२. उत्तर तथा दक्षिण भारत के सन्तों का-
सम्पर्क एवं प्रभाव : बाह्य प्रभाव : ।

३. परिस्थितिजन्य वैयक्तिक प्रभाव ।

द्वितीय परिच्छेद : पृष्ठ २२ से ५५ ।

"गुजरात के प्रमुख सन्त सम्प्रदाय"

१. शैव-शाक्त साधना एवं गोरख-पंथ ।
२. महानुभाव अथवा अच्युत सम्प्रदाय ।
३. रामानंद सम्प्रदाय ।

४. कबीर-पंथ :१: राम कबीरिया पंथ ।
:२: सत कबीरिया पंथ ।
:३: निर्वाण साहब की परम्परा ।

५. दादू-पंथ ।

६. प्रणामी-पंथ ।

७. सूफी सम्प्रदाय ।

८. दत्त सम्प्रदाय ।

९. राम सनेही सम्प्रदाय ।

१०. अन्य सम्प्रदाय :—

:अ: अखा प्रणालिका ।
:ब: निरांत सम्प्रदाय ।
:क: कुबेर-पंथ ।
:द: ब्रह्मचारी-आश्रम ।
:घ: श्रेय साधक अधिकारी वर्ग ।

तृतीय परिच्छेद : पृष्ठ ५६ से २२१ ।

"गुजरात के प्रमुख सन्त-कवि : जीवन और कृतित्व"

१. प्रस्तावना कालीन सन्त कवि : सं.१२५० से १५५० :

चक्रधर, कबीर साहब, नरसी मेहता, पीपा, रोहीदास : रैदास :, मीराँबाई, शेख बहाउद्दीन बाफन, काजी महमूद दरियायी, माडण ।

२. मध्यकालीन सन्त-कवि : सं.१५५० से १९०० :

पूर्व मध्यकाल : सं.१५५० से १७५० : हीरादास, समर्थदास, शाह अलीगाम धनी, माधवदास, दादू दयाल, प्यारेदास, ज्ञानी कवि अखा, नरहरि, गोपालदास, लालदास, प्राणनाथ, मुकुन्ददास,

गुरुदास, मोहम्मद अमीन, नाथभवान : अनुभवानंद :
बूटिया तथा अन्य ।

✓ उत्तर मध्यकाल : सं.१७५० से १९०० : भाणसाहब, कृष्णदास मेकनदादा, दीन दरवैश, रविसाहब, देवासाहब, खीमसाहब, प्रीतमदास, धीरा, त्रीकम-साहब, मोरारसाहब, गवरीबाई, केवलपुरी, त्रिविक्रमानंद, संत निर्मलदास, वस्तो विश्वम्भर, कुबेरदास, निरांत, सन्त होथी, जीवणदास, दासीजीवण, बापू साहब गायकवाड़, भोजा, मनोहरदास : सच्चिदानंद :, जीतामुनि नारायण, कल्याणदास, रंगीलदास, संतराम महाराज, नभू, क्रोटम, संत महात्यमराम, अनवर तथा अन्य ।

चतुर्थ परिच्छेद : पृष्ठ २२२ से २७७ ।

✓ "गुजरात के सन्त कवियों की दार्शनिक विचारधारा"

पृष्ठभूमि :

✓१. अद्वैत वेदान्त और उसका प्रभाव :

आचार्य गौडपाद और उनका अजातवाद ।
श्री.शंकराचार्य तथा उनका अद्वैतवाद ।

✓२. विशिष्टाद्वैतवाद और उसका प्रभाव :

✓३. सूफी साधना और उसका प्रभाव :

✓४. सांख्य, योग तथा गीता का प्रभाव :

सिद्धान्त पक्ष :

१. ब्रह्म निरूपण ।
२. जीव निरूपण ।
३. माया निरूपण ।
४. जगत निरूपण ।

साधना पक्ष :

भक्ति और ज्ञान ।
भक्ति का स्वरूप ।
भक्ति की विशेषताएँ ।
भक्ति के साधन और निष्कर्ष ।

पंचम् परिच्छेद : पृष्ठ २७८ से ३७१ ।

"गुजरात के सन्तों की हिन्दी वाणी:साहित्यिक मूल्यांकन"

वर्ण्य विषय :

१. आध्यात्मिक वर्ण्य विषय :

१. सृजनात्मक ।
२. ध्वंसात्मक ।

२. सामाजिक वर्ण्य विषय :

१. राजनीतिक व्यवस्था ।
२. धार्मिक व्यवस्था ।
३. वर्ण-भेद ।
४. नारी भावना ।
५. आर्थिक जीवन ।
६. मनोरंजन एवं आमोद-प्रमोद के साधन ।

प्रतीक विधान :

१. पारिभाषिक प्रतीक ।

२. भावात्मक प्रतीक ।

भाषा :

भाषा के विविध प्रयोग :

ब्रजभाषा, खड़ीबोली, फारसी, उर्दू, राजस्थानी, पंजाबी, सिन्धी, कच्छी, मराठी, गुजराती और गूजरी ।

विशिष्ट शब्द-प्रयोग :

विशिष्ट कारक-रूप :

विशिष्ट अव्यय-रूप :

विशिष्ट क्रिया-रूप :

शब्द विकार अथवा ध्वनि परिवर्तन :

मुहावरे और कहावतें :

निष्कर्ष :

अलंकार :

रूपक, दृष्टान्त, उदाहरण, उपमा, विभावना, अनुप्रास, अन्योक्ति, भ्रान्तिमान, निदर्शना, यमक, श्लेष, सम, लोकोक्ति, वीप्सा, अतिशयोक्ति तथा अन्य अलंकार ।

छन्द :

दोहा, चौपाई, कुंडलिया, छप्पय, हरिगीतिका, सवैया, घनाक्षरी : कवित्त : ।

✓ रस :

भक्ति रस, शान्त रस, अद्‌भुत रस, वीर रस, हास्य रस, वीभत्स रस, निष्कर्ष ।

✓ संगीत :

आन्तरिक संगीत, बाह्य संगीत ।

षष्ठ परिच्छेद : पृष्ठ ३७२ से ३९४ ।

✓ "गुजरात के सन्तों द्वारा प्रयुक्त विशिष्ट काव्य-प्रकार"

✓ प्रबन्ध रचनाएँ :

१. आख्यान अथवा चरित काव्य । २. मसनवी ।
३. कडवा तथा ऊप्पलो । ४. गोष्ठी : संवाद :
५. गीता ।

✓ मुक्तक रचनाएँ :

१. साखी। २. रमैनी ।
३. पद । ४. बारमासी : बारहमासी :
५. गरबी गरबा । ६. कक्का।
७. धोलु अथवा मंगलगीत । ८. आरती ।
९. लावणी । १०. होरी ।
११. कुप्पा । १२. जकडी ।
१३. गज़ल ।

सप्तम परिच्छेद : पृष्ठ ३६५ से ४०६ ।

"उ प सं हा र"

गुजरात के हिन्दी-सेवी सन्तों की देन :

१. भाषाकीय ।
२. साहित्यिक ।
३. सांस्कृतिक ।

परिशिष्ट : पृष्ठ ४१० से ४३६ ।

१. गुजराती सन्तों द्वारा प्रयुक्त पारिभाषिक शब्दावली ।
२. गुजरात के हिन्दी-सेवी सन्तों की नामावली ।
३. गुजरात के सन्त-कवियों द्वारा लिखित हिन्दी-ग्रन्थ ।
४. संदर्भ ग्रन्थ-सूची: — हिन्दी, गुजराती, अंग्रेजी ।

oo oo oo

" टंकण निर्देश "

प्रस्तुत अधिनिबन्ध को टंकित कराने में यद्यपि पूरी सावधानी बरती गयी है, तथापि टंकण-यन्त्र में पर्याप्त ध्वनि-संकेतों के अभाव के कारण कुछ संकेत अपने ढंग पर निश्चित करने पड़े हैं । यथा—

द्वारा	के स्थान पर	द्वारा
शब्द	के स्थान पर	शब्द
खण्ड	के स्थान पर	खण्ड
महत्त्व	के स्थान पर	महत्त्व
ॠ	के स्थान पर	ॠ

इसी प्रकार ( ) के स्थान पर : :, ' ' के स्थान पर ` ` तथा अर्द्ध-विराम के स्थान पर अल्प-विराम की व्यवस्था करनी पड़ी है । लेखक अपनी विवशता के लिए क्षमा-प्रार्थी है ।

ooo ooo ooo